आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :– कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:–प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2669 • उदयपुर, शनिवार 16 अप्रैल, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

नांदेड़ (महाराष्ट्र) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान का ध्येय है कि दिव्यांग भी दौड़ेगा–अपनी लाठी छोड़ेगा। इस क्रम में संस्थान की शाखाओं व दानदाताओं के सहयोग से दिव्यांग जाँच, उनका ऑपरेशन के लिये चयन तथा कृत्रिम अंगों का माप लेना व अंग लगाने का कार्य गति पर है। ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 3 व 4 अप्रेल 2022 को लोकमान्य मंगल कार्यालय अण्णा भाउ साठे चौक, नांदेड़ में हुआ। शिविर सहयोगकर्ता कृपा सिंधु दिव्यांग सेवा संघटना रहा। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 222, कृत्रिम अंग माप 92, कैलिपर माप 51 की सेवा हुई तथा 40 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री बालयोगी वेंकेट स्वामी जी महाराज, अध्यक्षता श्री सुदेश जी मुकाबार (शिविर संयोजक), विशिष्ट अतिथि श्री विनोद जी राठौड़ (माहुर, संयोजक), श्री लक्ष्मीकांत जी, श्री लक्ष्मी नारायण जी, श्री प्रदीप जी बुकरेवार, श्री इगडरे जी पाठील, श्री राजेश्वर जी मेडेवाल, श्री सचिन जी पालरेवार (समाज सेवी) रहे। डॉ. वरुण जी श्रीमाल (ऑर्थोपेडिक सर्जन), श्री रिहांस जी महता (पी.एन.डो.), श्री किशन जी (टेक्नीशियन) सहित शिविर टीम में हरिप्रसाद जी शर्मा (शिविर प्रभारी), श्री गोपाल जी गोस्वामी, श्री सत्यनारायण जी मीणा (सहायक) ने भी अमूल्य सेवायें दी।

वाराणसी (उत्तरप्रदेश) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान वर्षो से आपके आशीर्वाद से दिव्यांगजन सेवा में रत है। पूरे देश में स्थान–स्थान पर जाकर इसकी शाखाओं द्वारा दिव्यांगजन सहायता शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 2 व 3 अप्रेल 2022 को समर्पण अशोक विहार कॉलोनी, फेज–1, पहाड़िया, वाराणसी में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता भारत विकास परिषद व वरूणा सेवा संस्थान ट्रस्ट रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 105, कृत्रिम अंग वितरण 90, कैलिपर वितरण 15 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि डॉ. इन्दुसिंह जी (अध्यक्ष, वरूण सेवा समिति), अध्यक्षता श्री रमेश जी लालवानी (संस्थापक चैयरमेन), विशिष्ट अतिथि श्री विवके जी सूद, श्री मनोज कुमार जी श्रीवास्तव, श्री पंकज सिंह जी, श्री सी.ए. अलोक शिवाजी (समाज सेवी) रहे।

अंजली जी (पी.एन.डो.), श्री नरेश जी वैश्णव (टेक्नीशियन) सहित शिविर टीम में श्री अखिलेश जी (शिविर प्रभारी), श्री प्रकाश जी डामोर, श्री सुनिल जी श्रीवास्तव, श्री मनीश जी हिन्डोनिया, श्री राकेश सिंह जी (सहायक), श्री प्रवीण जी यादव (विडियोग्राफी) ने भी सेवायें दी।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच, ऑपरेशन चयन एवं कृत्रिम अंग (हाथ-पांव) माप शिविर

दिनांक 16-17 अप्रैल, 2022

• पंचायत समिति परिसर, श्रीकोलायत, बीकानेर
• शिव शक्ति हॉल, समस्त पाटीदार समाजवाडी सरदार चौक, मिनी बाजार, वराछा, सुरत, गुजरात

दिनांक 17 अप्रैल, 2022

• काली माता मन्दिर, धर्मशाला बस स्टेण्ड के पास, मलेरकोटला, पंजाब

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

पू. कैलाश जी 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन,नारायण सेवा संस्थान

'सेवक' प्रशान्त भैया
अध्यक्ष, नारायण सेवा संस्थान

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

स्नेह मिलन समारोह

दिनांक : 17 अप्रैल, 2022

स्थान

प्रसिडेंट हॉल, रेल्वे स्टेशन के सामने, जूनागढ़, गुजरात सायं 5.00 बजे
हरियाणा भवन, नारायण नगर, कुमारपारा, गुवाहाटी, आसाम, सायं 4.00 बजे
जामलीधाम, ठाकुर द्वारा गोशाल के पास, हमीरपुर, हिमाचल प्रदेश, प्रातः 11.00 बजे

इसस्नेह मिलन समारोह में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

पू. कैलाश जी 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन,नारायण सेवा संस्थान

'सेवक' प्रशान्त भैया
अध्यक्ष, नारायण सेवा संस्थान

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

विश्व स्वास्थ्य दिवस के उपलक्ष्य में श्री कुलदीप जी शर्मा, अपर जिला सत्र न्यायाधीश ने देखी नारायण सेवा

अपर जिला एवं सेशन न्यायाधीश तथा सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव श्री कुलदीप जी शर्मा ने गुरुवार को नारायण सेवा संस्थान का अवलोकन कर दिव्यांगता में निःशुल्क सुधारात्मक सर्जरी के लिए देश के विभिन्न भागों से आए किशोर–किशोरियों से भेंट कर हौसला अफजाई की व उनके सुखद जीवन की कामना की।

संस्थान अध्यक्ष प्रशान्त जी अग्रवाल ने स्वागत करते हुए संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों व रोजगारोन्मुख प्रशिक्षणों की जानकारी दी।

श्री शर्मा जी ने मानसिक विमंदित, प्रज्ञाचक्षु व दिव्यांग बालक–बालिकाओं के अधुनातन शिक्षण, आवासीय व्यवस्था कृत्रिम अंग एवं कैलीपर कार्यशाला तथा दिव्यांगजन की सर्जरी को देखा व चिकित्सकों से तत् सम्बंधी जानकारी ली। निदेशक वंदना जी अग्रवाल ने शर्मा को विश्व स्वास्थ्य दिवस पर विमंदित बालक द्वारा हस्त निर्मित पोस्टर भेंट किया। उन्होंने बालक से भेंट कर उसकी प्रतिभा को सराहा। इस अवसर पर संस्थान के वरिष्ठ कार्यकर्ता महिम जी जैन, संजय जी दवे, दिलीप जी चौहान व मोहित जी मेनारिया आदि भी मौजूद थे।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

बन्धुओं, माताओं– बहनों। उसने कहा–मैं तो बेचूंगा नहीं। तो उस लालची जमीदार ने क्या किया रास्ते में भिखारी बन के, बुढ्ढा बन के, विकलांग बन के। जैसे पैर से चला नहीं जाता, लकड़ी दोनों हाथ में ले ली। ओह करते–करते, कभी गिरता कभी चलता और जो हमारों गरीब आदमी थे, दयालु आदमी थे घोड़े वाले भाईसाहब थे। घोड़ा जिनको प्राणों से प्रिय था। वो घोड़े पे बैठकर जा रहे थे, उनको दया आ गई। उन्होंने कहा– भाई, मैं तो पैदल चला जाउंगा। मेरे पैरों में कोई तकलीफ नहीं है। आप आ जाओ घोड़े पे बैठ के अगले गाँव पहुँच जाओ। आपको कहाँ जाना है? अगले गाँव जाना है। तो घोड़े पे बैठ गये वो। अब तो वो नकली जैसे रावण दुष्ट साधु बन गया ना वैसे , वो लालची जमीदार था। तो आगे जा के दाढ़ी–मूछ उतार कर फेंक दी और कहा– मैंने तेरा घोड़ा छीन लिया। अब मैं तेरे घोड़े को नहीं दूंगा। और जैसे ही जाने लगा, रूको जमीदार जी रूको। ये बात किसी को मत कहना, घोड़ा भली आप ले जाओ, छल लिया आपने, आपने कपट किया, आपने भाव अशुद्धि कर ली। आपने वाणी को गलत कर लिया। आपने वाणी के दुरूपयोग के साथ, कर्मों का दुरूपयोग कर लिया। आप घोड़ा भली ले जाओ, लेकिन ये बात किसी को मत कहना। नहीं तो लोग गरीबों पे विश्वास करना बंद कर देंगे। ये लोग दया करना बंद कर देंगे। लोग विकलांगों को ठीक करना बंद कर देंगे। उनमें भी उनको शंका लगेगी। ये कथा आप ये कुव्यथा बीच का अंश है कि मैंने तेरे घोड़े को छल कर के छीन लिया। ये किसी को मत कहना।

हिरण बन गया यहाँ–वहाँ,
मायावी मारीच नीच,
श्रीसीता के सन्मुख जाकर,
लगा लुभाने उनको नीच।

मर्म समझ कर हंस कर प्रभु बोले।

पैरों की विकृति से मुक्त हुई ज्योत्स्ना

ज्योत्सना के दोनों पांव जन्मजात बाहर की तरफ मुड़े हुए थे। परिवार ने घर पर ही मालिश कर उम्मीद की कि विकृति दूर हो जाएगी। लेकिन उम्र के साथ समस्या बढ़ती गई। ठाणें (मुम्बई) निवासी ज्योत्सना को इसके कारण स्कूली शिक्षा भी छोड़नी पड़ी। परिवार की खराब माली हालत को देखते हुए कपड़ो की पैकिंग का घर बैठे काम शुरू किया। पिता टेक्सी चालक हैं, जिन्होंने अल्प आय के बावजूद बेटी का हर सम्भव उपचार करवाया, जिस अस्पताल में दिखाने की सलाह मिली, वहां इसे ले गए लेकिन लाभ नहीं मिला। तभी किसी ने इन्हें नारायण सेवा संस्थान में इस तरह की विकृतियां निःशुल्क सर्जरी के माधम से ठीक होना बताया। ज्योत्सना को लेकर पिता अगस्त 2021में संस्थान आए, जहां विशेशज्ञ चिकित्सकों ने परीक्षण के बाद पांवों के क्रमशः आवश्यक अन्तराल में ऑपरेशन किए। ज्योत्सना के अनुसार दोनों पांव की विकृति दूर हो चुकी हैं। लेकिन अभी उसे अपने पांवों पर खड़ा होने में थोड़ा वक्त और लगेगा। ज्योत्सना संस्थान में कम्प्युटर कोर्स की ट्रेनिंग कर आत्म निर्भर जीवन की ओर कदम बढ़ाने का संकल्प कर चुकी हैं।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

सम्पादकीय

परमात्मा द्वारा रचित सृष्टि में सेवा एक विशिष्ट उपासना है। सेवाभाव यदि स्वभावगत् हो तो न कर्मकाण्ड की आवश्यकता है, न स्वाध्याय की। क्योंकि परमात्मा को पाने के, उनके अनुभव करने के जितने भी साधन हैं, अंततः वे सभी निर्मल स्वभाव पर ले जाते हैं। स्वभाव निर्मल हो तो किसी का भी दुःख साधक को अपना ही लगता है। वह उस दुःख से मुक्ति के लिए प्रयासरत हो जाता है। अर्थात् सारी साधना के बाद भी काम वही श्रेष्ठ है जो परमात्मा को विशेष पसंद है और वह है सेवा। हम कर्मकाण्डों में भी विग्रह की, प्रतीकों की, श्रद्धा–बिन्दुओं की सेवा करके अंततः सेवा ही तो साधने का प्रयास करते हैं। स्वाध्याय भी अंत में हमें परमात्मा के कृतकार्यों से परिचय कराते हुए सेवार्थ ही तो प्रेरित करता है। अतः जो प्रारंभ से ही सेवा में लग गया हो वह कर्मकाण्ड व स्वाध्याय नहीं कर पाये तो भी कोई दोष नहीं माना जाता है। सभी प्रकार की भक्ति का सार सेवा ही है, अतः यदि प्रारंभ में ही सेवा सध जाय तो क्या कहना ?

कुछ काव्यमय

जीवन में जाना नहीं, परमेश्वर का प्यार।
वो भी क्या जीवन जिया, व्यर्थ और निस्सार।।
परमेश्वर जग पालता, नहीं किसी से भेद।
चाहे वह बेपढ़ मिला, चाहे पढ़ता वेद।।
परमेश्वर करुणा सुधा, बाँटे कर मनुहार।
दीनदुखी मिल जाय तो, तारन को तैयार।।
परमेश्वर को जो भजे, उनका कर विश्वास।
उन पर जल्दी रीझता, जो ना रखते आस।।
बड़ा कृपालु है प्रभु, सेवा से खुश होय।
सेवक पर करता कृपा, इह–पर सुधरे दोय।।

दयालु संत

एक संत थे। वे जीवन भर निःस्वार्थ भाव से लोगों की सेवा करते रहे। एक बार देवताओं का एक समूह उनकी कुटिया के समीप से निकला। संत साधनारत् थे। वे साधना से उठे और बड़े ही श्रद्धाभाव से उनकी सेवा की। देवतागण संत की सेवा से अत्यंत प्रसन्न हुए।

देवताओं ने संत से कहा –आपके लोकहितार्थ किए गए कार्यों से हम सभी बहुत प्रसन्न हैं, आप जो चाहें, वह वरदान माँग लें।

देवताओं की बात सुनकर संत विस्मित से हो गए और कहने लगे–मेरी जरूरत की सभी व्यवस्थाएँ तो हैं। अब और क्या माँगू? मुझे तो कुछ भी नहीं चाहिए।

देवताओं ने आग्रह किया, तो भी संत

ने कुछ भी माँगने से मना कर दिया, तब देवताओं ने आशीर्वाद दिया और कहा –सदैव दूसरों का कल्याण करते रहो।

संत –यह दुष्कर कार्य मुझसे नहीं हो पाएगा? देवता–क्यों? यह कोई दुष्कर कार्य नहीं है।

संत–मैंने कभी किसी को दूसरा माना ही नहीं। मैंने तो सभी को अपना माना है। इसीलिए यह मेरे लिए दुष्कर कार्य है।

संत की बात सुनकर देवता अत्यंत प्रसन्न हो गए। उन्होंने संत से कहा – आपकी तो परछाई से भी सबका कल्याण होगा।

यह बात भी संत ने एक शर्त पर स्वीकार की। उन्होंने देवताओं से कहा– मेरी परछाई से किसी का भी कल्याण हो, परंतु उस बात का मुझे कभी भी पता ना चले। ऐसी व्यवस्था सदैव रखना ताकि मुझमें कभी यह अहंकार ना हो कि मेरे द्वारा इतने लोगों का भला हो चुका है।

संत की बात सुनकर देवता अत्यंत प्रसन्न हो गए। उन्होंने संत को आशीर्वाद दिया और वहाँ से चले गए। दुनिया में आज ऐसे ही संतों की जरूरत है, जिनमें पर–कल्याण की भावना के साथ निःस्वार्थता और विनम्रता के गुण भरे हों।

– कैलाश 'मानव'

जाको राखे साइयाँ

ईश्वर जिसे बचाना चाहता है, उसे कोई मार नहीं सकता और ठीक उसी तरह ईश्वर जिसे मारना चाहता है, उसे कोई बचा नहीं सकता। मृत्यु शैय्या तक पहुँचे प्राणी भी अक्सर ईश्वर–कृपा से पुनः जिंदगी की ओर लौट आते हैं।

जंगल में एक दिन मौसम बहुत खराब था। आसमान में बिजलियाँ चमक रहीं थीं, तेज आँधी चल रही थी। सभी जानवर अपनी जान बचाने हेतु इधर–उधर भाग रहे थे। उसी जंगल में एक मादा हिरण थी, जिसका प्रसव–काल अत्यन्त निकट था। वह भी अपनी संतान को किसी सुरक्षित

जगह पर जन्म देना चाहती थी। अचानक उसे कुछ झाड़ियाँ नजर आईं। वह दुबक कर उन झाड़ियों के अन्दर बैठ गई। वह बच्चे को जन्म देने ही वाली थी कि उसकी नजर कुछ ही दूरी पर बैठे शेर पर पड़ी। वह भी उसकी ओर घात लगाकर बैठा था। हिरणी एकदम से सहम गई, उसने धीरे से गरदन दूसरी तरफ घुमाई तो उसने देखा कि एक शिकारी भी उसकी तरफ तीर साधे कुछ ही दूरी पर बैठा हुआ था। उस हिरणी के लिए दोनों तरफ मौत, एक तरफ कुँआ तो दूसरी तरफ खाई के समान थी। वह पूर्णतः बेसहारा थी। उसने अपनी आँखें बंद कीं, परमात्मा को याद किया और दोनों तरफ की चिन्ताएँ छोड़कर पूरा ध्यान अपने प्रसव की ओर देना शुरू कर दिया। अचानक आसमान में जोरदार बिजली कड़की, जो सीधी शिकारी के हाथ पर गिरी और उसका हाथ जल गया तथा हड़बड़ाहट में उसके हाथ से तीर छूट गया, जो सीधा जाकर शेर को लगा। तीर के तेज प्रहार से शेर के प्राण–पखेरू उड़ गए। हिरणी ने अपनी सारी चिन्ताएँ छोड़कर मात्र परमात्मा और अपने कर्म का ध्यान किया तो उसकी जान बच गई तथा उसने एक स्वस्थ शिशु को जन्म दिया।

सच ही कहा है कि –

जाँको राखे साईयाँ,
मार सके न कोय।
बाल न बाँका कर सके,
जो जग बैरी होय।।

–सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

गांवों में गरीबी बहुत थी। ब्रांच पोस्टमास्टर भी घर से ही काम करते थे,एक गांव में निरीक्षण के दौरान कैलाश वहां के पोस्ट मास्टर के घर ही ठहरा । उसे पता था कि वो अत्यंत गरीब है। मगर कोई अन्य चारा भी नहीं था। उस गांव में इसके पहले कभी कोई इंसपेक्टर आया ही नहीं था। पोस्ट मास्टर ने अपने बच्चे के हाथ में एक पैसा रखा और बोला – जा घी ले आ। कैलाश ने यह देख लिया उसका कलेजा मुंह को आ गया , इतनी गरीबी में भी वह आतिथ्य परम्परा का भरसक निर्वाह करने की कोशिश कर रहा था। कैलाश ने तुरंत बच्चे को रोका। नहीं बेटा नहीं, घी लाने की जरूरत नहीं। आप लोग जैसा खाते हो मैं भी वैसा ही खाऊंगा। पोस्ट मास्टर के नेत्र दीनता से सजल हो उठे। उस क्षेत्र में बाजरा प्रचुरता से होता है। थोड़ी ही देर में बाजरे की रोटी और छाछ लेकर पोस्ट मास्टर आया। कैलाश स्वाद ले लेकर खाने लगा तो पोस्ट मास्टर रोने लगा । कैलाश हतप्रभ रह गया ऐसी क्या बात हो गई। उसने पूछ लिया तो कातर स्वरों में वह बोला इतने बड़े साहब मेरे घर पर आये हैं। मैं उन्हें लूकी रोटी खिला रहा हूँ । कैलाश ने उसके कंधे पर हाथ रखा और विश्वास दिलाया कि वह अक्सर लूकी रोटी ही खाता है। फिर उसने छाछ के साथ रोटी खाने में आ रहे आनन्द का वर्णन कर उसकी उसकी ग्लानि दूर करने की कोशिश की।

समय व्यतीत होता रहा। फरवरी 1979 में एक आदेश आया। उस समय डाक एवं तार दोनों एक ही विभाग के अन्तर्गत थे। कैलाश डाक से आया था, उसे तार का कोई अनुभव नहीं था। डाक क्षेत्र से आये अधिकारियों को तार क्षेत्र का प्रशिक्षण देने के लिए जयपुर में एक महीने का प्रशिक्षण शिविर आयोजित हो रहा था। यह आदेश उसी में भाग लेने का था। कमला व बच्चों को सरदारशहर ही छोड़ कैलाश जयपुर पहुँच गया। स्टेशन के पास ही बड़ा पोस्ट ऑफिस था। उसके मित्र लश्करी भी वहीं रहते थे, उनसे मिलने गया तो उन्होंने एक खाली कमरा बताया, वह उसी में ठहर गया। महीने भर के प्रशिक्षण के अन्त में परीक्षा देनी थी। इस हेतु कुछ पुस्तकें भी दी गई। कैलाश प्रशिक्षण के बाद अपने कमरे में ये पुस्तकें पढ़ने लगा।

अंश - 066

संस्थान द्वारा दिव्यांग दम्पती व बच्चे की मदद

नारायण सेवा संस्थान ने दिव्यांग धर्माराम (13) और रमेश मीणा (28) को उनकी विपरीत परिस्थितियों में तात्कालिक मदद पहुँचाई है। कानोड़ तहसील जिला उदयपुर (राज.) के तालाब फलां निवासी रमेश पुत्र वाला मीणा का घर आग लगने से स्वाह हो गया था।

संस्थान ने अनाज, वस्त्र, कम्बल मसाले आदि देकर उसकी मदद की। रमेश और उसकी पत्नी लोगरी दोनों ही जन्मजात दिव्यांग है। चार बच्चों के साथ गृहस्थी को चलाना, पहले से ही इसके लिए भारी था और अब घर के जल जाने से उस पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा है। वहीं मंगलवार को पीआरओ विपुल शर्मा को फुटपाथ पर मिले धर्मा पुत्र कंवरलाल को व्हीलचेयर, कपड़े, बिस्किट एवं राशन देने के साथ उसका सीपी टेस्ट करवाया। इस बालक की दो वर्ष पूर्व बीमारी के दौरान आवाज और आंखों की रोशनी चली गई थी। अब इसके पांव भी नाकाम हो गए है। डॉक्टर्स टीम आवश्यक चिकित्सा के लिए प्रयासरत हैं। संस्थान निदेशक वंदना जी अग्रवाल ने कहा कि विषमता में परेशान दिव्यांगों एवं दुखियों को ज्यादा से ज्यादा मदद पहुंचाने के लिए संस्थान तत्पर है। इस अवसर पर विष्णु जी शर्मा हितैषी, भगवान प्रसाद जी गौड़, दिलीप सिंह जी, फतेहलाल जी मौजूद रहे।

टमाटर खाएं, लिवर कैंसर दूर भगाएं

टमाटर के सेवन से लिवर कैंसर के बढ़ते खतरे को कम किया जा सकता है। चूहों पर किए गए एक अध्ययन में यह निष्कर्ष निकला है।

लिवर कैंसर उच्च वसायुक्त आहार के कारण होता है। शोधकर्ताओं के अनुसार टमाटर में भरपूर मात्रा में लाइकोपीन होता है। यह एक प्रबल एंटीऑक्सीडेंट, एंटीइंलेमेटोरी और एंटीकैंसर एजेंट होता है। लाइकोपीन फैटी लिवर रोग, इंलेमेशन और लिवर कैंसर को कम करने में मदद करता है। अमेरिका की टट्स यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर शियांग–डोंग वांग ने कहा, 'टमाटर और इससे निर्मित उत्पादों मसलन सॉस, केचअप और जूस लाइकोपीन का अच्छा स्रोत हो सकते हैं। हमने लिवर कैंसर की रोकथाम में लाइकोपीन सप्लीमेंट की अपेक्षा टमाटर के पाउडर को ज्यादा प्रभावी पाया है।'

हृदय गति से लग सकता है बहरेपन का पता

शोधकर्ताओं ने प्रारंभिक अवस्था में ही बहरेपन का पता लगाने का एक नया तरीका खोज निकाला है। उनका कहना है कि हृदय गति पर नजर रखने के जरिये सुनने की क्षमता का आकलन किया जा सकता है। ऑस्ट्रेलिया के बायोनिक्स इंस्टीट्यूट मेडिकल रिसर्च सेंटर के शोधकर्ताओं ने फंक्शनल नीयर–इंफ्रारेड स्पेक्ट्रोस्कोपी नामक ब्रेन इमेजिंग तकनीक की मदद से हृदय गति का आकलन किया। इस तकनीक के जरिये आवाज के प्रति मस्तिष्क की प्रतिक्रिया और हृदय गति को रिकार्ड किया गया। इसके आधार पर शोधकर्ताओं ने इस बात की पुष्टि की कि आवाज का स्तर हृदय गति पर सीधा असर डालता है। उन्होंने कहा कि प्रारंभिक अवस्था में ही बहरेपन का पता चलना महत्वपूर्ण है। इससे इस समस्या की रोकथाम में मदद मिल सकती है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

माँ से बढ़कर कोई नहीं

स्वामी विवेकानंद जी से एक जिज्ञासु ने प्रश्न किया, मां की महिमा संसार में किस कारण से गाई जाती है? स्वामी जी मुसकराए, उस व्यक्ति से बोले, पांच सेर वजन का एक पत्थर ले आओ।

जब व्यक्ति पत्थर ले आया तो स्वामी जी ने उससे कहा, अब इस पत्थर को किसी कपड़े में लपेटकर अपने पेट पर बाँध लो और चौबीस घंटे बाद मेरे पास आओ तो मैं तुम्हारे प्रश्न का उत्तर दूंगा।

स्वामी जी के आदेशानुसार उस व्यक्ति ने पत्थर को अपने पेट पर बांध लिया और चला गया। पत्थर बंधे हुए दिनभर वो अपना कम करता रहा, किन्तु हर क्षण उसे परेशानी और थकान महसूस हुई। शाम होते–होते पत्थर का बोझ संभाले हुए चलना फिरना उसके लिए असह्य हो उठा। थका मांदा वह स्वामी जी के पास पंहुचा और बोला मैं इस पत्थर को अब और अधिक देर तक बांधे नहीं रख सकूंगा। एक प्रश्न का उत्तर पाने के लिए मै इतनी कड़ी सजा नहीं भुगत सकता। स्वामी जी मुसकुराते हुए बोले, पेट पर इस पत्थर का बोझ तुमसे कुछ घंटे भी नहीं उठाया गया।

मां अपने गर्भ में पलने वाले शिशु को पूरे नौ माह तक ढोती है और गृहस्थी का सारा काम करती है। संसार में मां के सिवा कोई इतना धैर्यवान और सहनशील नहीं है। इसलिए माँ से बढ़ कर इस संसार में कोई और नहीं।

अनुभव अमृतम्

वो क्षण जब हुबली से धारवाड़ या अन्य कहीं जाने वाले थे, रेलगाडी छूटने के 15 मिनट पहले आदरणीय सुरेश जी मूणोत साहब के बड़े साले जी दौडे–दौडे चले आये थे– रेलवे स्टेशन पर। गरम–गरम फुल्के, पराठे, सब्जियाँ, हलवा, पकौड़े टिफिन में भर कर लाये थे। उस समय नेत्रों में जल भर आया। कहाँ से पी. जी. जैन साहब मिल गये? सोजत रोड वाले। सोजत के पास ही घॉणेराव है, उसी घॉणेराव में एक आई शिविर में परम् पूज्य चम्पालाल जी पोखरणा साहब का परिचय हुआ था। पहली पत्रिका सेवा संदीपन दी गई थी। बाद में उनको साधक के पते पर भेजने लगे, उनके निवास स्थान पर भेजने लगे, कडियाँ से कडियाँ जुड़ती गई। चम्पालाल जी पोखरणा राजमल जी भाई साहब की कृपा से, राजमल जी भाई साहब सोहन लाल जी पाटनी की कृपा से, सोहन लाल जी पाटनी सिरोही वाले हॉस्पिटल वार्ड में विस्तारित तौर से, अभी मैं गिनने लग गया था। 1976 में मैं कितने साल का था। 29 साल का था, 29 साल के युवा को हर बेड पर राम–राम करते हुए देख रहे थे। कभी मौसमी निकालते हुए प्रदान कर रहे थे, अरे तेरा नहीं है, ये शरीर भी तेरा नहीं है, ये अभिमान भी तेरा नहीं है, कहते हैं हम तो स्वाभिमानी हैं, स्वाभिमानी से कब अभिमानी बन गये? मन को चोट लगी? क्या चोट लगी, चोट को मानो और भोगो तो चोट, वरना न मानो तो थोड़े समय बाद ठीक हो जाती है। व्याधि में समाधि, मणिप्रभा जी की गुरुवाणी लीजिए, धारवाड़ गये। धारवाड़ पास में ही है। ज्यादा दूर नहीं है, कार से 30–40 किलोमीटर है।

हुबली से पहले धारवाड़ गये, बहुत अच्छा कपडे का व्यवसाय, साफ सुथरा एकदम, ऐसा प्रोग्राम स्वच्छता, तकिये की खोलियें एकदम स्वच्छ, अदभुत दृश्य, भोजन करते हुए बड़ी थाली, पी. जी. जैन साहब, मैं कैलाश उनके छोटे कजिन भाई दुकान के मालिक धारवाड़ में, एक साथ भोजन करते थे, पापड, मिठाई लीजिए, 1976 में 30 का हुआ, 1989 चल रहा है, जन्म से अब तक 42 साल हो गये, 42 साल की उम्र में पारब्रह्म परमात्मा की कृपा। एक दो दिन रहे धारवाड़ में, बडा प्रेम, बडा स्नेह, जहाँ भी गये पहले ये कहा–बाबू जी पहले भोजन की हाँ भरो, जो भी रसीद बुक आप लाये हैं, कुछ ना कुछ भरेंगे, फूल की जगह पाँखुडी जरूर देंगे, खाली हाथ नहीं लौटायेंगे, लेकिन पहले जीमण की हाँ भरो, ऐसा भी देखा 85 साल के वृद्व पिताजी ने दुकान के गल्ले पर उनका बेटा बैठा हुआ था। बेटे से कहा मोहन बेटा कैलाश जी को बीस हजार दे दे, कमरा बनाना है। जी, पिताजी–तुरन्त प्रणाम करके बीस हजार रुपये दोनों हाथों में रख दिये, कोई प्रश्न नहीं पिताजी से, कई बार ऐसा होता है, परिवार पूछता है, आप ने हमें पूछा नहीं, आप ने हमसे बात नहीं की। पिताजी की इच्छा हुई अच्छे कार्य के लिये बीस हजार दिलवा दिये, जो बेटा दुकान सम्भालता था, एक क्षण के लिए कोई तर्क नहीं, वितर्क नहीं, चेहरे पर कोई सिलवट नहीं, बीस हजार रुपये हाथों में दे दिये, वाह! अदभुत, विलक्षण !

सेवा ईश्वरीय उपहार– 419 (कैलाश 'मानव')

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023